STUDY OF THE EFFECT OF SELF-REALIZATION ON THE ACADEMIC ACHIEVEMENT OF SCHEDULED CASTE AND SCHEDULED TRIBE STUDENTS

Dr Lokesh Tripathi

Associate Professor, B ED Department, B R D P G College, Deoria

अनुसूचित जाति एवं जनजाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर उनके आत्मबोध के प्रभाव का अध्ययन

डॉ. लोकेश त्रिपाठी,

एसोसिएट प्रोफेसर बी.एड विभाग, बी.आर.डी.पी.जी. कॉलेज, देवरिया

IJRSSH

ABSTRACT

The ability to contemplate, contemplate and imagine is different in each boy and girl, on the basis of which she can accomplish different types of work on the path of life. Self-realization actively influences the academic achievement of students. In the present research, the effect of self-realization has been studied on the academic achievement of students belonging to Scheduled Castes and Scheduled Tribes. It has been found by statistical calculation by asking self-actualization test and academic achievement test on students of class 10th that there is a positive effect of self-realization on the academic achievement of students belonging to Scheduled Castes and Scheduled Tribes. Therefore, Educational achievement should be improved by providing opportunities to increase the self-realization of students by involving them in educational tours, cultural and literary activities, seminars and various competitions.

संक्षेप

प्रत्येक बालक-बालिका में चिंतन, मनन एवं कल्पना करने की क्षमता भिन्न-भिन्न होती है जिसके आधार पर वह विभिन्न प्रकार के कार्य सम्पादित कर जीवन पथ पर अग्रसर होता है। विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर आत्मबोध का सक्रिय रूप से प्रभाव पड़ता है। प्रस्तुत शोध में अनुसूचित जाति एवं जनजाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर उनके आत्मबोध के प्रभाव का अध्ययन किया गया है। कक्षा 10 वीं के विद्यार्थियों पर आत्मबोध परीक्षण तथा शैक्षिक

उपलब्धि परीक्षण प्रशासित कर सांख्यिकीय गणना द्वारा यह ज्ञात हुआ है कि अनुसूचित जाति एवं जनजाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर उनके आत्मबोध का धनात्मक प्रभाव पड़ता है। अतः विद्यार्थियों को शैक्षिक भ्रमण,सांस्कृतिक एवं साहित्यिक गतिविधि, सेमीनार तथा विभिन्न प्रतियोगिताओं में शामिल कर उनके आत्मबोध में वृद्धि के अवसर प्रदान कर शैक्षिक उपलब्धि में सुधार किया जाना चाहिए।

प्रस्तावना (Introduction) -

समान शैक्षिक वातावरण में शिक्षा ग्रहण करने के बावजूद प्रत्येक बालक-बालिका की सोच एवं व्यवहार में अंतर पाया जाता है। प्रायः विद्यार्थियों की बौद्धिक शक्तियों एवं शैक्षिक उपलब्धियों पर वातावरण एवं वंशानुक्रम के साथ-साथ बुद्धि, अभिप्रेरणा, आर्थिक-सामाजिक स्तर, पढ़ने की आदत एवं आत्मबोध जैसे अनेक कारकों का सकिय रूप से प्रभाव पड़ता है। इन समस्त कारकों में आत्मबोध एक प्रमुख कारक है, जो विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करता है।

आत्मबोध व्यक्ति के स्वयं को देखने का तरीका है। यह उसके सोचने, अनुभव करने के तरीकों को भी दर्शाता है। आत्मबोध का सीधा संबंध व्यक्ति की सूझ से होने के साथ-साथ मानसिक परिपक्वता से भी होता है। आत्मबोध बालक-बालिका की शैक्षिक उपलब्धि को सकारात्मक या नकारात्मक रूप से प्रभावित करता है। आत्मबोध व्यक्ति विशेष के खास गुण, आचरण और सोच को प्रदर्शित करता है। छात्रों के व्यक्तित्व के विकास में स्वयं के बोध की भूमिका अत्यधिक महत्वपूर्ण होती है। अतः शिक्षण प्रकिया के लिए यह आवश्यक है कि बालक के आत्मबोध का अधिकाधिक विकास किया जाए। साथ ही शिक्षकों को छात्रों के आत्मबोध का भी ज्ञान होना चाहिए, जिससे छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि में वृद्धि की जा सके।

शोध के उद्देश्य (Objectives of the Study) - शोध के उद्देश्य निम्नानुसार हैं -

1. अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करना।
2. अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के आत्मबोध का अध्ययन करना।
3. अनुसूचित जाति एवं जनजाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि की तुलना करना ।
4. अनुसूचित जाति एवं जनजाति के विद्यार्थियों के आत्मबोध की तुलना करना।
5. अनुसूचित जाति एवं जनजाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं आत्मबोध में सह संबंध का अध्ययन करना।
6. अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों के आत्मबोध पर लिंग के प्रभाव का अध्ययन करना ।
7. अनुसूचित जाति के छात्र-छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि पर लिंग के प्रभाव का अध्ययन करना।

IJRSSH

परिकल्पनाएँ (Hypotheses) – प्रस्तुत शोध की परिकल्पनाएँ निम्नलिखित हैं -

1. अनुसूचित जाति के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर नहीं पाया जायेगा।
2. अनुसूचित जनजाति के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर नहीं पाया जायेगा।
3. अनुसूचित जाति के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के आत्मबोध में सार्थक अन्तर नहीं होगा।
4. अनुसूचित जनजाति के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के आत्मबोध में सार्थक अन्तर नहीं होगा।
5. अनुसूचितजाति एवं जनजाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर नहीं पाया जायेगा।
6. अनुसूचितजाति एवं जनजाति के विद्यार्थियों के आत्मबोध में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जायेगा।
7. अनुसूचितजाति एवं जनजाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं आत्मबोध में धनात्मक सह संबंध पाया जायेगा।
8. अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों के आत्मबोध पर लिंग का प्रभाव नहीं पाया जायेगा।
9. अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर लिंग का प्रभाव नहीं पाया जायेगा।

परिसीमन (Delimitation) – प्रस्तुत अध्ययन को जिला देवरिया के अंतर्गत आने वाले ग्रामीण एवं शहरी शासकीय विद्यालयों के देवरिया स्तर में अध्ययनरत् अनुसूचित जाति एवं जनजाति के छात्र छात्राओं तक परिसीमित किया गया है।

शोध प्रक्रिया (Research Process) -

शोध विधि (Research Method) – इस शोध समस्या के अध्ययन हेतु सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

• **न्यादर्श (Sample)** – प्रस्तुत लघु शोध में न्यादर्श का चयन निम्नानुसार है -

स. क.	चयनित माध्यमिक विद्यालय	वर्गवार न्यादर्शविद्यार्थियों का वितरण				योग
		अनुसूचित जाति		अनुसूचित जनजाति		
1	ग्रामीण	छात्र	छात्रा	छात्र	छात्रा	
2	शहरी	25	25	25	25	100
		25	25	25	25	100
		50	50	50	50	200

IJRSSH

• **उपकरण (Tools) -** प्रस्तुत शोध के निम्नांकित उपकरण हैं -

(1) आत्मबोध परीक्षण मापनी (SBP) – डॉ. जी. पी. शैरी, डॉ. आर. पी. वर्मा, डॉ. पी. के. गोस्वामी

(2) स्व निर्मित शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण मापनी – कुल 30 वैकल्पिक प्रश्न हैं।

• **चर (Variables) -** प्रस्तुत लघुशोध प्रबंध में निम्नलिखित चर हैं –

1. स्वतंत्र चर – आत्मबोध
2. आश्रित चर – शैक्षिक उपलब्धि

सांख्यिकीय विश्लेषण (Statistical Operations) – प्रस्तुत शोध में सांख्यिकीय विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन, मध्यमान के अंतर की सार्थकता (t मान) तथा सह संबध की गणना की गयी।

परिकल्पना क्रमांक – 01

"अनुसूचित जाति के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर नहीं पाया जायेगा।"

सारिणी क्रमांक – 01

क्र.	समूह	न्यादर्श संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	प्रमाणिक विचलन त्रुटि	स्वतंत्रता का अंश	टी-मान	सार्थकता स्तर
1	अनुसूचित जाति के ग्रामीण विद्यार्थी	50	20.92	4.55	0.95	98	1.38	1% विश्वास स्तर NS
2	अनुसूचित जाति के शहरी विद्यार्थी	50	22.24	4.96				

अनुसूचित जाति के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमानों के मध्य अंतर का t मान 1.23 पाया गया जो 98 df तथा 1 प्रतिशत विश्वास स्तर पर सारिणी मान से कम है। अतः अंतर सार्थक नहीं है व परिकल्पना क्रमांक-01 स्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना क्रमांक – 02

"अनुसूचित जनजाति के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर नहीं पाया जायेगा।"

IJRSSH

सारिणी क्रमांक - 02

क्र.	समूह	न्यादर्श संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	प्रमाणिक विचलन त्रुटि	स्वतंत्रता का अंश	टी-मान	सार्थकता स्तर
1	अनुसूचित जाति के ग्रामीण विद्यार्थी	50	20.92	4.55	0.95	98	1.38	1% विश्वास स्तर NS
2	अनुसूचित जाति के शहरी विद्यार्थी	50	22.24	4.96				

अनुसूचित जनजाति के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के उपलब्धि स्तर के मध्यमान क्रमशः 20.92 तथा 22.24 प्राप्त हुए। मध्यमानों के मध्य अंतर का t मान 1.38 प्राप्त हुआ जो 0.01 विश्वास स्तर पर सारिणीगत मान से कम है। अतः दोनों में सार्थक अंतर नहीं है। इसलिए परिकल्पना क्रमांक – 02 स्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना क्रमांक – 03

"अनुसूचित जाति के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के आत्मबोध में सार्थक अन्तर नहीं होगा।"

सारिणी क्रमांक – 03

क्र.	समूह	न्यादर्श संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	प्रमाणिक विचलन त्रुटि	स्वतंत्रता का अंश	टी-मान	सार्थकता स्तर
1	अनुसूचित जाति के ग्रामीण विद्यार्थी	50	20.92	4.55	0.95	98	1.38	1% विश्वास स्तर NS
2	अनुसूचित जाति के शहरी विद्यार्थी	50	22.24	4.96				

अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों ग्रामीण व शहरी के आत्मबोध के प्राप्तांकों का मध्यमान क्रमशः 33.08 तथा 36 पाया गया। मध्यमानों के मध्य अंतर की सार्थकता का मान 2.58 है जो 0.05 विश्वास स्तर पर सारिणीगत मान से अधिक है। उपर्युक्त विश्लेषण के आधार पर परिकल्पना क्रमांक- 03 अस्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना क्रमांक – 04

"अनुसूचित जनजाति के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के आत्मबोध में सार्थक अन्तर नहीं होगा।

IJRSSH

सारिणी क्रमांक - 04

क्र.	समूह	न्यादर्श संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	प्रमाणिक विचलन त्रुटि	स्वतंत्रता का अंश	टी-मान	सार्थकता स्तर
1	अनुसूचित जनजाति के ग्रामीण विद्यार्थी	50	32.64	5.24	1.14	98	1.24	NS 0.01 विश्वास स्तर पर
2	अनुसूचित जनजाति के शहरी विद्यार्थी	50	34.6	6.20				

अनुसूचित जनजाति के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के आत्मबोध के मानों के मध्यमान क्रमशः 32.61 तथा 34.06 पाए गए। इनके मध्य सार्थकता की गणना हेतु प्राप्त 1 मान 1.24 प्राप्त हुआ जो 0.05 विश्वास स्तर पर प्राप्त मान से कम है। अतः दोनों में सार्थक अंतर नहीं है। अतः परिकल्पना क्रमांक – 04 स्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना क्रमांक – 05

"अनुसूचित जाति एवं जनजाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर नहीं पाया जायेगा।"

सारिणी क्रमांक – 05

क्र.	समूह	न्यादर्श संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	प्रमाणिक विचलन त्रुटि	स्वतंत्रता का अंश	टी-मान	सार्थकता स्तर
1	अनुसूचित जाति के कुल विद्यार्थी	100	20.58	3.26	0.57	198	1.75	0.05 विश्वास स्तर पर NS
2	अनुसूचित जाति के कुल विद्यार्थी	100	21.58	4.78				

दोनों समूहों के मध्यमानों के मध्य t मान 1.75 प्राप्त हुआ जो 0.05 विश्वास स्तर पर प्राप्त मान से कम है। अतः सार्थक अंतर नहीं है। इसलिए परिकल्पना क्रमांक- 05 स्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना क्रमांक - 06

"अनुसूचितजाति एवं जनजाति के विद्यार्थियों की आत्मबोध में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जायेगा।

IJRSSH

सारिणी क्रमांक – 06

क्र.	समूह	न्यादर्श संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	प्रमाणिक विचलन त्रुटि	स्वतंत्रता का अंश	टी-मान	सार्थकता स्तर
1	अनुसूचित जाति के कुल विद्यार्थी	100	34.54	5.4	1.14	198	1.04	0.01 विश्वास स्तर पर NS
2	अनुसूचित जाति के कुल विद्यार्थी	100	33.35	5.76				

अनुसूचित जाति तथा अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों के आत्मबोध के मध्यमानों के मध्य t मान 1.04 प्राप्त हुआ है जो सारिणी मान 0.01 विश्वास स्तर पर सारिणीगत मान से कम है। अतः सार्थक अंतर नहीं है। परिकल्पना क्रमांक- 06 स्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना क्रमांक – 07

"अनुसूचित जाति एवं जनजाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं आत्मबोध में धनात्मक सह संबंध पाया जायेगा।"

सारिणी क्रमांक – 07

क्र.	समूह	न्यादर्श संख्या	मध्यमान		सह संबंध गुणांक	सह संबंध का प्रकार एवं स्तर
			शैक्षिक उपलब्धि	आत्मबोध		
1	अनुसूचित जाति एवं जनजाति के कुल विद्यार्थी	200	21.08	33.95	+ 0.18	नगण्य धनात्मक सह संबंध

अनुसूचित जाति एवं जनजाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं आत्मबोध के मध्यमानों के मध्य प्राप्त सह संबंध + 0.18 पाया गया जो नगण्य धनात्मक सह संबंध है। इसलिए क्रमांक- 07 स्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना क्रमांक – 08

"अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों के आत्मबोध पर लिंग का प्रभाव नहीं पाया जायेगा।

IJRSSH

सारिणी क्रमांक – 08

क्र.	समूह	न्यादर्श संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	प्रमाणिक विचलन त्रुटि	स्वतंत्रता का अंश	टी-मान	सार्थकता स्तर
1	अनुसूचित जाति वर्ग की बालिकाएँ	50	36.48	5.95	1.11	98	3.49	sp<0.01
2	अनुसूचित जाति वर्ग के बालक	50	32.60	5.19				

उपर्युक्त विश्लेषण के आधार पर परिकल्पना क्रमांक- 08 अस्वीकृत की जाती है क्योंकि अनुसूचित जाति वर्ग के छात्र एवं छात्राओं के मध्य आत्मबोध पर लिंग का सार्थक प्रभाव पाया गया।

परिकल्पना क्रमांक – 09

"अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर लिंग का प्रभाव नहीं पाया जायेगा।"

सारिणी क्रमांक – 09

क्र.	समूह	न्यादर्श संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	प्रमाणिक विचलन त्रुटि	स्वतंत्रता का अंश	टी-मान	सार्थकता स्तर
1	अनुसूचित जाति वर्ग के बालक	50	22.02	4.56	0.95	98	0.92	NS
2	अनुसूचित जाति वर्ग की बालिकाएँ	50	21.14	5.01				

उपर्युक्त विश्लेषण के आधार पर परिकल्पना क्रमांक-09 स्वीकृत की जाती है क्योंकि अनुसूचित जनजाति के बालक व बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमानों की सार्थकता का मान सारिणीगत मान से कम है, इसलिए सार्थक अंतर नहीं है।

निष्कर्ष (Conclusion) – प्रस्तुत शोध में संकलित आँकड़ों से प्राप्त निष्कर्ष हैं -

1. अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति वर्ग के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में अन्तर नहीं पाया गया।

IJRSSH

2. अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति वर्ग के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के आत्मबोध में अन्तर नहीं पाया गया।
3. अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति वर्ग के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में अन्तर नहीं पाया गया।
4. अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति वर्ग के विद्यार्थियों के आत्मबोध में अन्तर नहीं पाया गया।
5. अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति वर्ग के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं आत्मबोध के मध्य धनात्मक सह संबंध पाया गया।
6. अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों के आत्मबोध पर उनके लिंग का प्रभाव पाया गया।
7. अनुसूचित जनजाति के छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि पर उनके लिंग का कोई प्रभाव नहीं पाया गया।

सुझाव (Suggestions)- शोध निष्कर्षों के आधार पर निम्नांकित सुझाव प्रस्तुत हैं -

1. आत्मबोध निर्माण के लिए ग्रामीण एवं शहरी शालाओं के अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों हेतु विशेष प्रयास करना चाहिए।

2. विद्यार्थियों के आत्मबोध वृद्धि हेतु शैक्षिक भ्रमण, सांस्कृतिक एवं साहित्यिक गतिविधि, सेमीनार तथा विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाना चाहिए।

संदर्भ (References)

1. आदित्य,प्रमोद (1994) :- "आदिवासी छात्र-छात्राओं के आत्मबोध का उनकी उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन" (एम.एड. लघुशोध, गु.घा.वि.वि. बिलासपुर)
2. भारथी, जी.ए.(1984) : "ए स्टडी ऑफ सेल्फ कान्सेप्ट एण्ड एचिव्हमेंट ऑफ अर्ली एडोलसेन्ट" (फोर्थ सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजुकेशन, 1983-88, वॉल्यूम-1) पेज-34

REFERENCES

1. Aditya Pramod (1994), "Adivasi Chhatr-Chhatraon ke Atmbodh ka Unki Uplabdhi par padne wale Prabhav ka Adhyayan", (M. Ed. Short Research, G.G.U., Bilaspur)
2. Bharthi G.A.(1984), "A Study of Self Concept and Achievement of Early Adolescence" (Forth Survey of Research in Education, 1983-88, Volume-1) pg-34

IJRSSH